जयपुर में कर्मयोगी रामगोपाल गार्ड जन्मशताब्दी तथा स्मृति ग्रंथ के विमोचन के अवसर पर माननीय अध्यक्ष का संबोधन

आज हम सब एक ऐसे कर्मयोगी को याद कर रहे हैं, स्मरण कर रहे हैं, जिन्होंने अपना पूरा जीवन समाजसेवा के लिए समर्पित किया। श्री रामगोपाल गार्ड जी हमारे बीच में सशरीर उपस्थित नहीं हैं। लेकिन उनके विचार, उनके कार्य, उनकी सेवा हम सबको स्मरण भी हो रही है और महसूस भी हो रही है।

व्यक्ति समाज में सशरीर रहे या न रहे, लेकिन जिसने जीवनभर अपने आप को समाज के लिए समर्पित किया हो, जिसका जीवन केवल सेवा हो, किस तरीके से लोगों के सामाजिक, आर्थिक जीवन में परिवर्तन हो सकता है, जिसने उसके लिए पूरा जीवन समर्पित कर दिया हो, ऐसे कर्मयोगी की हम जन्म शताब्दी मना रहे हैं।

मुझे खुशी है कि उनके स्मृति ग्रंथ को भी आज विमोचन होने का अवसर प्राप्त हुआ है, ताकि उनके जीवन के कुछ क्षण हमारे सामने आ सकें। केवल उनके जीवन को पूरा लिखना पड़े तो कई किताबें छोटी पड़ जाएंगी। लेकिन उनके जीवन के जो महत्वपूर्ण क्षण हैं, उनको मोहन लाल जी ने कुछ शब्दों में लिखने का प्रयास किया है।

वे भी मानते हैं कि उनका एक विराट व्यक्तित्व था। उनका विराट जीवन था। उस विराट व्यक्तित्व और जीवन को कभी कलम से लिखना बहुत मुश्किल होता है, लेकिन फिर भी उन्होंने प्रयास किया है। इसके लिए मैं उनको बधाई देता हूँ, शुभकामनाएं देता हूँ।

अभी मैं एक चित्र देख रहा था। उनकी स्मृति की कुछ झलकियां यहां लगी हुई थीं। मुझे पता है कि जब उन्होंने गुर्जर संघर्ष के लिए, सबसे पहले जब आंदोलन किया था, आमरण अनशन किया था और आमरण अनशन के बाद जब पहली मीटिंग हुई थी, तब मेरे घर पर हुई थी। आप भी उपस्थित थे। तो मुझे पता था कि वे समाज के लिए कितने समर्पित थे।

न पद की लालसा, केवल मेरा समाज, जो सामाजिक और आर्थिक रूप से पिछड़ गया है, मैं कैसे उस समाज को आगे लाऊं, कैसे समाज के नौजवान युवक-युवतियों को अच्छी शिक्षा, अच्छे संस्कार, अच्छी संस्कृति के माध्यम से उसको अग्रिम पंक्ति पर लाने का काम करूं, यही उनका ध्येय था।

जब हम गुर्जर समाज का इतिहास पढ़ते हैं, उनकी विरासत को याद करते हैं, तो हमें पता चलता है कि उनका इतिहास और विरासत हमेशा वीरता का रहा है। उनका इतिहास एवं विरासत बलिदान एवं समर्पण का रहा है।

हम पन्ना धाय के बलिदान को कैसे भूल सकते हैं! इससे बड़ा समर्पण और त्याग क्या हो सकता है! यह समर्पण, त्याग और सेवा इस गुर्जर समाज की संस्कृति में हमेशा से रही है। जब आप विरासत और इतिहास को याद करते हैं तो देखते हैं कि भगवान देवनारायण जी ने किस तरीके से समाज के कल्याण के लिए काम किया। समाज में होने वाले अत्याचार के खिलाफ और गौ माता के लिए उनका जीवन समर्पित रहा है।

ऐसे कितने इतिहास और विरासत की कहानियाँ हैं, जब राजा के योद्धा के रूप में और राजाओं की सेना युद्ध में लड़ती थीं। उस समय भी युद्ध की

अग्रिम पंक्ति में गुर्जर समाज के लोग रहते थे। भारत में ही नहीं, बल्कि भारत के बाहर जब-जब भी राजाओं की सेना गई, अंग्रेजों ने भारत के सैनिकों को बाहर भेजा, उस समय की गुर्जर समाज की वीरता और साहस का इतिहास एवं कहानी, आज भी हम सबको प्रेरणा देती हैं।

जब हम विरासत की बात करते हैं तो आज की इतिहास की भी बात करते हैं। आज भी जब देश की सीमाओं का रक्षा करने का सवाल आया तो एक सैनिक के रूप में हमारे कितने नौजवानों ने देश के लिए बलिदान दिया। उनका बलिदान, उनकी कुर्बानियाँ, हम सबको प्रेरणा देती हैं। इसे हम कैसे भूल सकते हैं! अंग्रेजों के शासन के खिलाफ एक किसान आंदोलन के रूप में विजय सिंह पथिक जी ने आजादी की लड़ाई लड़ी थी।

उस समय भी किसानों के आत्मसम्मान और स्वाभिमान के लिए उन्होंने एक लंबा समर्पित आंदोलन करने का प्रयास किया। ऐसे बहुत सारे आंदोलन हुए, जिसमें वीरता, साहस, धर्म को बचाने की बात हो और आध्यात्मिकता के लिए एक बहुत बड़ा इतिहास और विरासत रही है, जिनको शब्दों में और कुछ नामों से बोला नहीं जा सकता।

आज भी मैं देखता हूं कि समाज सेवा के लिए, आप जिस गांव में रहते हैं, जिस ढाणी में रहते हैं, वहां पर कुछ भी आपदा हो, संकट हो, पीड़ा हो, गुर्जर समाज हमेशा अग्रिम पंक्ति में सेवा के लिए समर्पित रहता है। इस विरासत, इतिहास और वर्तमान में रामगोपाल जी, गार्ड साहब जैसे लोगों के योगादान के कारण, इस स्वाभिमानी समाज का हर जगह समर्पण और सेवा के अंदर एक इतिहास है।

श्री रामगोपाल जी, गार्ड साहब ने जब समाज बिखरा हुआ था, समाज में सामाजिक चेतना लाने का काम करने की आवश्यकता थी, समाज में सामाजिक कुरीतियों को समाप्त करके शिक्षा के माध्यम से समाज में आर्थिक, सामाजिक परिवर्तन लाने थे, उस समय समाज को एक संस्कार में, एक माला में जोड़ने का काम, समाज को संगठित करने का काम रामगोपाल जी, गार्ड साहब ने किया, जिन्होंने पहला संगठन खड़ा किया। उस संगठन की विरासत को आज हमारे पूर्व मंत्री कालू राम जी गुर्जर साहब जी बढ़ा रहे हैं और कुछ बदलाव भी हुआ है। कुछ सामाजिक बदलाव हुआ है, आर्थिक बदलाव हुआ है।

लेकिन हमारा लक्ष्य कुछ और है। जिस तरीके का गुर्जर समाज का इतिहास है, विरासत है, उनकी संस्कृति है, संस्कार है, उनके जीवन में आध्यात्मिक धर्म है, हमारा लक्ष्य अभी बहुत दूर है। हमें समाज के उस अंतिम व्यक्ति के जीवन में परिवर्तन लाना है और उस परिवर्तन के लिए सामूहिक प्रयास करने की आवश्यकता है।

जो समाज में आगे बढ़ गए हैं, जो समाज में पढ़ चुके हैं, केवल उनके अपने परिवार को शिक्षित नहीं, समाज के अंतिम व्यक्ति को शिक्षित-दीक्षित करने के लिए रामगोपाल जी, गार्ड के जीवन को स्मरण करना होगा, उनके जीवन को याद करना होगा, उनके कार्यों से प्रेरणा लेनी होगी।

हम चाहते हैं कि वह वीरता, शूरता, स्वाभिमान समाज में हो। जो दूरदराज कहीं जंगल में रहकर लोगों की सेवा करने का काम कर रहे हैं, उनके लिए एक बार और सामूहिक प्रयास करने की आवश्यकता है। हमें बहुत समय नहीं गुजारना है।

समय के साथ तो परिवर्तन होता ही है, लेकिन कम समय में ज्यादा लक्ष्यों को प्राप्त करना, कम समय में समाज में सामाजिक, आर्थिक परिवर्तन लाना, यह हम सबकी सामूहिक जिम्मेदारी है। अगर हमें देश को आगे बढ़ाना है, देश को समृद्ध बनाना है, राष्ट्र को खुशहाल बनाना है, तो सभी समाजों को सामूहिक प्रयास करने की आवश्यकता है।

जब पिछड़ा, वंचित समाज आगे बढ़ेगा, उनका नौजवान बदलती शिक्षा प्रणाली के अंदर एक समर्थ नौजवान बनेगा, हमारी बेटियां जो आज चाहे सीमा पर रक्षा करने का काम हो, चाहे फाइटर प्लेन चलाने का काम हो, चाहे रेल चलाने का काम हो, चाहे विज्ञान में हो, टेक्नोलॉजी में हो, इंडस्ट्रीज़ के अंदर सभी सैक्टर के अंदर हो, डॉक्टर हो, इंजीनियर हो, कोई क्षेत्र ऐसा नहीं है, जिस क्षेत्र में हमारी बहनों और बेटियों ने कीर्तिमान हासिल नहीं किया हो।

अगर देश को आगे बढ़ाना है, तो सभी समाजों को आगे बढ़ना पड़ेगा और सभी समाजों को आगे बढ़ाने के लिए उस समाज को तो प्रयास करना ही होगा, लेकिन जिस समाज के लोग आगे बढ़ गए हैं, उनको और कड़ी मेहनत, और कड़ा परिश्रम करने की आवश्यकता है और समर्पण सेवा से काम करने की आवश्यकता है।

मेरा विश्वास है कि हम अपने जीवन के कुछ क्षण, कुछ दिन जो कुछ भी समाज से प्राप्त किया है, अगर इस समाज को समर्पित करेंगे तो मेरा विश्वास है कि गुर्जर समाज का वह सामर्थ्य नौजवानों में है, वे शारीरिक रूप से समर्थ हैं, वे मन मस्तिष्क से समर्थ है और उनमें अच्छे संस्कार हैं, उनमें अच्छे विचार हैं।

हमारी बेटियां किसी भी क्षेत्र में चली जाएं, खेल के क्षेत्र में चली जाएं तो वहां भी गुर्जर समाज की बेटियों ने नाम किया है, चहो विज्ञान का क्षेत्र हो, डॉक्टर हो, इंजीनियर हो, कोई सेक्टर ऐसा नहीं है जिसमें गुर्जर समाज की बेटियों ने नये कीर्तिमान हासिल नहीं किए हों।

लेकिन हर बेटी को आगे बढ़ना है। समाज के हर नौजवान को सामर्थ्यवान नौजवान बनाना है। हमारे नौजवानों की सामर्थ्यवान शक्ति, उनकी बौद्धिक क्षमता, उनके नवाचार, नये इनोवेशन करने की चिंतन, ये देश को आगे बढ़ाने का काम कर रहे हैं।

इसलिए मेरा आपसे निवदेन है, हम जहां भी रहते हैं, जिस स्थान पर भी रहते हैं, हमारे चिंतन और विचार में हमारा समाज होना चाहिए। हमारे समाज में कोई बेटा-बेटी बिना पढ़ी न रह जाएं, जैसा पुरानी पीढ़ी रह चुकी है। आने वाली पीढ़ी को एक सामर्थ्यवान, एक शिक्षित पीढ़ी तैयार करनी है, इसके लिए हर व्यक्ति की जिम्मेदारी है, सामूहिकता के साथ जिम्मेदारी है।

संगठन जोड़ने का काम करते हैं। संगठन की सामूहिक संस्कृति नई ऊर्जा देने का काम करती है, संगठन समाज को तोड़ने का काम नहीं करती है। मैं जब समाजों के बीच जाता हूं तो कहता हूं कि समाज जोड़ने का काम करता है, समाज भारत को नयी ताकत देने का काम करता है।

समाज भारत को सामर्थ्यवान बनाने का काम करते हैं। जितना समाज सामर्थ्यवान होगा, जितना हमारा नौजवान बौद्धिक क्षमता से शिक्षित होगा, उतना ही देश आगे बढ़ेगा, इसलिए हमें ऐसे कर्मयोगियों के जीवन को पढ़ना पड़ेगा। जब साधन नहीं थे, न संचार के साधन थे, न समाज इतना शिक्षित था, न दीक्षित था, लेकिन हमारा समाज शुरू से स्वाभिमान रहा है। सभ्यता और

संस्कृति को बचाने का काम शुरू से रहा है। उसको नयी चेतना देने का काम किया।

राम गोपाल जी गार्ड, तोरन सिंह जी जैसे कितने लोग हैं, जिन्होंने अपनी अच्छी सेवाओं को त्यागपत्र देकर यहां पर आएं, उन्होंने अपने को समाज के लिए समर्पित कर दिया। आज ऐसे महापुरुषों की हम जन्म शताब्दी मनाते हैं तो हमें प्रेरणा मिलती है। उनके विचार, उनकी सोच, उनकी चिंतन, उनकी दूरदृष्टि हम सभी को प्रेरणा देती है।

मुझे आशा है कि रामगोपाल गार्ड जी का जीवन तप ऋषि, कर्मयोगी का जीवन प्रेरणा देता रहेगा। हमें उनकी इस प्रेरणा इस समाज के नए उत्थान, नयी समृद्धि व खुशहाली लाने का प्रयास करेंगे।

मुझे आशा है कि हम सामूहिकता से काम करेंगे तो इस समाज को नयी ऊंचाई पर ले जाने का काम करेंगे, यही हमारा सामूहिक प्रयास होना चाहिए।